समाजशास्त्रीय निकष
और
कमलेश्वर की कहानियाँ

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

समाजशास्त्रीय निकष
और
कमलेश्वर की कहानियाँ

डॉ. अमित कुमार भारती

नमूना • SAMPLE

ADHYAYA

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली (भारत)

प्रकाशक

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

हेड ऑफिस : ए-108, स्ट्रीट न0. 1/3, कौशल पुरी, दिल्ली-110094 **(भारत)**

Phone : 9968628081, 9643620664,

E-mail : adhyayapublishers@gmail.com,
adhyayapublishers@yahoo.com

Website : www.adhyayabooks.com

समाजशास्त्रीय निकष और कमलेश्वर की कहानियाँ

संस्करण : 2020

© लेखक

ISBN: 978-93-88688-03-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

वीरेन्द्र कुमार यादव 'अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के द्वारा प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE COPY

प्राक्कथन

साहित्य का समाजशास्त्र वस्तुतः साहित्य और समाज के अन्तः सम्बन्धों, अन्तःक्रियाओं का लेखा-जोखा है, विविध सन्दर्भों में समाज की प्रतिछाया साहित्य में परिलक्षित होती है। समाज नानाविधि साहित्य को प्रभावित करता है। इसी तरह साहित्य की प्रतिक्रियाएँ भी समाज को आन्दोलित करती हैं। इन बहुआयामी अन्तःक्रियाओं, अन्तःसम्बन्धों, अन्तः प्रभावों का आकलन 'साहित्य का समाजशास्त्र' होता है।

इतिहासकार तेन लिखते हैं कि साहित्य के सृजन में तीन बातें प्रमुख भूमिका निभाती हैं - व्यक्ति, सन्दर्भ और प्रजाति। एक दृष्टि से देखने से कहा जा सकता है कि यह कथन अतिरंजक है, यह समाज को साहित्य का नियामक तत्व मानता है, जबकि साहित्य और समाज का समीकरण इतना इकहरा नहीं है। अगर समाज साहित्य-निर्माण में भूमिका निभाता है तो साहित्य भी समाज रचना में अपनी भूमिका निभाता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इस देश में जिस दैन्य, निराशा, घुटन, असन्तोष और आस्थाहीनता का व्यापक प्रसार अबाधगति से हुआ वह साहित्य-सृष्टा के मन-मस्तिष्क को निरन्तर प्रभावित और आन्दोलित करता रहा है। सन् 1956-1957 तक नयी कविता के आधार पर इस कहानी का नाम नयी कहानी रख दिया गया। यह आत्मसंघर्ष और मानसिक तनाव के कारण 1950 के बाद की कहानी से स्पष्ट रूप से अलग है। 'नया' शब्द का प्रयोग तत्कालीन युग के बोध में काफी हद तक सार्थक सिद्ध है।

नई कहानी आन्दोलन को नूतन दिशा देने वालों में कमलेश्वर का अग्रगण्य स्थान है, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर की त्रयी में कमलेश्वर अपनी

SAMPLE

कथावस्तु और अनुभूति की व्यापक पकड़ के कारण विशेष स्थान रखते हैं। अज्ञात नहीं है कि कथाकार कहानियाँ भले ही किसी घटना को लेकर चलते हैं किन्तु उसका एक व्यापक सामाजिक सरोकार होता है।

कमलेश्वर ने नयी कहानी के मूल स्वर के विषय में बताते हुए कहा है कि ''कहानी में नयी से अभिप्राय उस नयी संचेतना से है जो आज के समूचे जीवन की विडम्बना को ग्रहण कर उसको रचना के स्तर पर पहुँचाने में समर्थ है। नयेपन को हमने ओढ़ा नहीं बल्कि हमारे लिए एक अनिवार्य स्थिति है। नयी कहानी अंधेरे की चीख नहीं अंधेरे में खोज है।''

कमलेश्वर लिखते हैं कि ''नई कहानी ने अपने जातीय राष्ट्रीय सन्दर्भों से अपने को अधिक जोड़ा है। अपने समाज के मानसिक, आर्थिक और नैतिक रूप से प्रताड़ित दलित, बुझे और टूटे हुए पात्रों को ही सहानुभूति और संवेदना दी थी। नई कहानी का सम्वेदनात्मक स्तर पर लोक-जीवन से सीधा सम्बन्ध था, नई कहानी के लेखकों ने उस यथार्थ संकट को झेला था, उसे आत्मसात किया था, जो युद्ध और विभाजन के पश्चात् एकाएक आ खड़ा था।''

कमलेश्वर की कहानियाँ आजादी के बाद निम्नमध्यवर्गीय जीवन की तल्ख अनुभूति की प्रत्यक्ष चित्रण करती हैं जो सिर्फ कमलेश्वर की कहानियों की ही विशेषता नहीं बल्कि सम्पूर्ण नई कहानी की विशेषता है। 'दिल्ली में एक मौत', 'राजा निरबंसिया', 'मांस का दरिया', 'इतने अच्छे दिन', उनकी चर्चित कहानियाँ हैं। 'दिल्ली में एक मौत' महानगरों में व्याप्त प्रदर्शन प्रियता को परत-दर-परत उघाड़ती चलती है जिसमें एक अन्त्येष्टि में एकत्रित स्त्री-पुरुष अपने फैशन पर ज्यादा ध्यान देते हैं, संवेदना को प्रकट ज्यादा करते हैं, महसूस कम। इस कहानी के माध्यम से कमलेश्वर ने महानगरीय संस्कृति में पनप रही बर्बरता को रेखांकित किया है। 'राजा निरबंसिया' आर्थिक अभाव के कारण दरकते पति-पत्नी सम्बन्धों को प्रस्तुत करती है। यह कमलेश्वर की पहली श्रेष्ठ कहानी है, जिसने कथा-कथन के पुराने प्लेटफार्म को ध्वस्त कर दिया नये शिल्प और नई भाषा के द्वारा कहानी 'आम आदमी' की समस्या, पीड़ा को व्यक्त करती है। 'मांस का दरिया' कहानी जुगनू नामक वेश्या के माध्यम से वेश्या के जीवन, परिवेश, उसकी मनःस्थिति, पीड़ा और परिस्थिति को व्यक्त करती है जहाँ मानवीयता लुप्त हो गयी है। एक स्त्री केवल काम तृप्ति का उपकरण बन कर रह गयी है। 'इतने अच्छे दिन' कहानी दलित जीवन की बेबसी, असहायता, गरीबी को रेखांकित करती है। इस प्रकार 'राजा निरबंसिया' से 'कस्बे

का आदमी', 'नीली झील', 'एक अश्लील कहानी', मध्यवर्गीय जीवन की सादगी से शुरू होकर महानगर की आधुनिक संचेतनाओं और संश्लिष्टताओं का प्रतिनिधित्व करती है।

कमलेश्वर की कहानियों के सामाजिक चरित्र को दुष्यन्त कुमार ने ठीक ही लक्षित किया और लिखा कि ''उसकी (कमलेश्वर) की हर कहानी जीवन सन्दर्भों से जुड़ी है। इसकी शायद ही कोई कहानी ऐसी हो जिसके सूत्र जिन्दगी में न हो क्योंकि वह बहुत बखूबी से अन्तर्विरोधों को पकड़ता है। उसकी लगभग हर कहानी का एक वास्तविक स्थान है जहाँ से वह उसे उठाता है और अपने कथा की कल्पना अपेक्षाओं के साथ अभिव्यक्ति कर देता है।''

कमलेश्वर की कहानियों का समाजशास्त्रीय ढंग से मूल्यांकन, विश्लेषण और विवेचन ही प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है, जिसकी प्रेरणा मुझे उसके बहुचर्चित उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' से मिली। कमलेश्वर समकालीन कथा जगत में उतने ही सजग एवं सक्रिय कहानीकार रहे, जितना कि नई कहानी आन्दोलन के समय। कमलेश्वर की कहानियाँ समाज के निम्न मध्यवर्गीय जीवन के विराट फलक को हमारे समक्ष उपस्थित करती हैं।

नई कहानी में प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों, परम्पराओं और संस्थाओं पर प्रश्नचिह्न लगाया है और इस अर्थ में प्रस्तावित अध्ययन द्वारा कमलेश्वर की कहानियों में बनी और बदली सामाजिक संगठन की भी विवेचना करने का प्रयास मैंने किया है। कमलेश्वर की कहानियों के समाजशास्त्रीय अध्ययन पर मेरी जानकारी में अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। अतः समाजशास्त्रीय अध्ययन की दिशा में यह सम्भवतः पहला कदम होगा जिसको सार्थक, सकारात्मक स्वरूप देने का प्रयास किया गया है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् पाश्चात्य शिक्षा, भौतिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के प्रचार और प्रसार के साथ सामाजिक संरचना में काफी फेरबदल हुआ। इस बदलाव की प्रक्रिया को कमलेश्वर की कहानियों में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इस सम्बन्ध में दुष्यन्त के विचार दृष्टव्य है कि ''प्रगति में परिवर्तन का बोध निहित है और कमलेश्वर की प्रगति इसी परिवर्तन की प्रतिक्रिया को समझने का परिणाम है। उसकी कहानियाँ भाषा और कथ्य समाज के बदलते हुए भिन्न-भिन्न परिवेशों की देन हैं।'' जिसको उद्घाटित करने का प्रयास मैंने अपने अध्ययन में किया है।

आज शोध विषयक इस सारस्वत साधना का अंतिम पड़ाव उपस्थित हुआ है। मन भावाकुल है। भाववेशित मन को शब्दबद्ध करने के उपक्रम में अन्यान्य मनीषियों-गुरुजनों, सहकर्मी, मित्रों तथा परिजनों के प्रति मैं अवनत हूँ।

वस्तुतः इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में विषय के प्रति समझदारी एवं सुझाव, सहयोग प्रदान करने वाले सभी विचारकों, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों, प्राध्यापकों, शुभचिंतकों, विद्वान लेखकों आदि के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ। शोध कार्य को सम्पन्न करना कठिन परिश्रम का कार्य है। वह भी किसी बहुचर्चित रचनाकार के कहानी साहित्य का अध्ययन करना जोखिम उठाना है। यह एक गम्भीर साधना सरीखा है जिसमें इतिहास एवं समाज को टटोलना और उससे साक्षात्कार करना है।

मेरी इस शोध साधना के प्रेरणा पुरुष और सार्थक, सकारात्मक, सहयोग एवं अपने स्नेह शुभआशीष से सींचने वाले परम् आदरणीय गुरुवर (इमेरिटस) प्रोफेसर सत्येदव मिश्र जी का अनिर्वाच्य योगदान है जिनके सान्निध्य में रहकर मैंने साहित्य, इतिहास, दर्शन और सृजनात्मक जीवन की सार्थकता को पहचाना। गुरु जी ने समय-समय पर व्याख्यानों, सुझावों द्वारा मुझे ज्ञानोन्मुख किया। मेरी चेतना को बौद्धिक, सृजनात्मक एवं क्रियाशील बनाने में उन्होंने हर सम्भव प्रयास किया। ऐसे सरल, सहज, प्रतिष्ठित विद्वान के निर्देशन में शोध कार्य करना मेरे लिए अत्यन्त गौरव की बात है। मैं उनके इस सहयोग के लिए सत्-सत् नमन करता हूँ। परम आदरणीय गुरुमाता डॉ. कल्पना मिश्र के ममतामयी स्नेह को कैसे भूला जा सकता है जो मुझे प्रेरणा प्रदान करती रहीं हैं। उनके प्रति भी आभारी हूँ।

विशेष रूप से आभारी हूँ माननीय कमलेश्वर एवं उनकी पत्नी गायत्री कमलेश्वर जी का जिन्होंने अपने व्यस्ततम दिनचर्या से मेरे लिए समय निकाला। मिलने के लिए तिथि निश्चित कर सूचना दी। दिल्ली के सूरजकुण्ड स्थित आवास पर कमलेश्वर जी से मेरी पहली मुलाकात के दौरान उनके द्वारा इतिहास, साहित्य, राजनीति, साम्प्रदायिकता, जातिएता आदि जैसे ज्वलन्त विषयों पर समसामयिक सन्दर्भों में की गयी टिप्पणी एवं तथ्यात्मक अभिव्यक्ति ने मेरा पथ आलोकित किया। उन्होंने कहानी साहित्य के पात्रों, परिवेशों, वातावरण एवं भाषा के सन्दर्भ में दिशा-निर्देश दिया जिससे शोध कार्य को नवीन एवं प्रामाणिक बनाने में पर्याप्त सहायता मिली। ऐसे विद्वान लेखक सामाजिक-सांस्कृतिक कर्मी व्यक्ति के कहानी साहित्य का अध्ययन करना मेरे लिए किसी चुनौती से कम न था। कमलेश्वर जी के व्यक्तित्व एवं स्वभाव से जुड़े पहलूओं से श्रीमती गायत्री कमलेश्वर जी ने मुझे

अवगत कराया जो मेरे शोध कार्य की अमूल्य निधि है। कमलेश्वर जी पत्रों एवं टेलीफोनिक वार्ता के माध्यम से निरन्तर अपने सुझावों दिशा-निर्देशों से मुझे प्रेरणा प्रदान करते रहे। वस्तुतः उनके दिशा-निर्देशन का ही प्रतिफलन है कि यह शोध कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो सका।

इस शोध प्रबन्ध के लिए मैं परम आदरणीय गुरुवर प्रोफेसर प्रेमशंकर तिवारी जी का आभारी हूँ जिन्होंने अपने दिशा-निर्देशन द्वारा मेरा ज्ञानवर्धन किया। प्रोफेसर हरिशंकर मिश्र, प्रोफेसर के.डी. सिंह, प्रोफेसर कालीचरण, 'स्नेही', डॉ. प्रेम सुमन शर्मा, डॉ. वाई पी. सिंह, डॉ. पवन अग्रवाल, डॉ. रीता चौधरी, डॉ. सूर्य बहादुर थापा, डॉ. अल्का पाण्डेय, डॉ. रश्मि कुमार, डॉ. टी. पी. राही, श्री रविकान्त गोयल के प्रति उनके सहयोग के लिए मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा संचालित भाषा-केन्द्र लखनऊ में एम.फिल्. पाठ्यक्रम के अध्ययन के दौरान 'साहित्य के समाजशास्त्र' विषय पर दिये ओजपूर्ण एवं सैद्धान्तिक व्याख्यान के द्वारा इस विषय पर मेरी जो समझ बन पायी उसके लिए गुरुवर प्रोफेसर सूर्यप्रसाद दीक्षित के प्रति मैं आभारी हूँ। डॉ. ललित किशोर शुक्ल, क्षेत्रीय, निर्देशक म.मा.अ.श.वि.वि. वर्धा, महाराष्ट्र, डॉ. सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव, रिसर्च अधिकारी, भाषा विज्ञान-विभाग, भारत सरकार, कलकत्ता, प्रोफेसर महेश सिंह कुशवाहा, 'पूर्व अध्यक्ष' अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यलाय, लखनऊ के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरी सहायता की।

मेरे पिता श्री विन्द्रा प्रसाद एवं माता श्रीमती यशोदा देवी का स्नेह आशीर्वाद सदैव मुझे मिलता रहा है। मैं उनके श्रीचरणों में निरन्तर अवनत हूँ। मेरे अनुज डॉ. अन्नू, एडवोकेट- सिकन्दर प्रसाद, एडवोकेट - अमरेन्द्र कुभार भारती, बहन सुश्री चन्द्रलेखा ने परिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन कर मुझे अकादिक कार्य के लिए अवसर प्रदान किया। मैं इन सभी के प्रति स्नेहिल संवेदना व्यक्त करता हूँ। मेरी पत्नी श्रीमती रीमा भारती ने सामाजिक दायित्वों का बखूबी निर्वहन करते हुए मुझे हर सम्भव मदद दी है। मेरे पुत्र चिरंजीव शाश्वत प्रज्ञ और श्रेयांश प्रज्ञ के नन्हें - नन्हे प्यारे नेत्रों में प्रतिबिम्बित मनोभाव मुझे हताशा - निराशा में उबरने की बार -बार प्रेरणा देते रहे हैं। इन दोनों के प्रति भी हृदय से आशीर्वाद।

विशेष रूप से आभारी हूँ श्री अखिलेश शंखधर 'असिस्टेंट प्रोफेसर' हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल के प्रति जिन्होंने कई महत्त्वपूर्ण सहयोगी पुस्तकों के साथ कमलेश्वर पर 'बरगद' पत्रिका का विशेषांक उपलब्ध कराया। इष्ट

मित्र डॉ. यशवन्त वीरोदय के साथ साहित्य के समाजशास्त्र, कविता का समाजशास्त्र, कहानी का समाजशास्त्र आदि जैसे विषयों पर जोरदार बहसों ने अध्ययन की पृष्ठिका तैयार की।

प्रस्तुत कृति लखनऊ विश्वविद्यालय की पीएच.डी. उपाधि हेतु ''कथाकार कमलेश्वर की कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' विषय पर स्वीकृत शोध प्रबन्ध का प्रकाशित रूप है, जिसे प्रोफेसर-सत्यदेव मिश्र के निर्देशन में पूर्ण किया गया था। इस अवसर पर मैं गुरुवर की स्मृति को नमन करता हूँ ।

इस पुस्तक को व्यवस्थित, त्रुटिपूर्ण एवं सुन्दर स्वरूप देने में श्री विरेन्द्र कुमार यादव जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही जिन्होंने अत्यन्त लगन एवं परिश्रम के साथ बहुत कम समय में इसे प्रकाशित किया आपके प्रति भी हृदय से आभार।

नमूना • SAMPLE

विषय सूची

	प्राक्कथन	*v*
1.	कमलेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय	1
2.	साहित्य का समाजशास्त्रः अर्थवत्ता और स्वरूप	52
3.	कमलेश्वर की प्रमुख कहानियों में चित्रित समाज	85
4.	कमलेश्वर की कहानियों में प्रस्तुत सामाजिक संस्थाएँ	159
5.	समाजशास्त्रीय अध्ययन के प्रतिमानों के आधार पर कमलेश्वर के कहानी साहित्य का विश्लेषण - विवेचन	210
6.	उपसंहार	271
7.	वरिष्ठ साहित्यकार मा. कमलेश्वर का शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार	283
	सहायक ग्रन्थ सूची	291

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

1

कमलेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय

व्यक्ति की सही पहचान उसकी व्यक्तिगत रुचियों, आदतों, प्रतिक्रियाओं, परिवेश एवं सृजन के मूल्यांकन के आधार पर ही सम्भव होती है। व्यक्तित्व व्यक्ति के सम्पूर्ण मानसिक और शारीरिक संगठन का नाम है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके परिवेश का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इस सम्बन्ध में श्याम शर्मा का कथन है कि - "परिवेश हर व्यक्ति को मिलता है, किन्तु उसे भोगने की प्रक्रिया हर एक की अलग-अलग हुआ करती है।"[01]

कमलेश्वर ने अपने परिवेश के सन्दर्भ में एक साक्षात्कार में कहा है- "मेरे पास लोक के संस्कार थे क्योंकि मैं कस्बे से आया था। मेरा कस्बा गाँव और शहर के बीच की एक सराय जैसा है।"[02] कमलेश्वर के व्यक्तित्व पर बेबाक टिप्पणी करते हुए उनके अभिन्न मित्र दुष्यंत कुमार कहते हैं - "उसका लड़कपन का यह चुनाव (साहित्य लेखन) जो उस वक्त उसने भावुकता में किया था, आज सही साबित हो चुका है। शायद कमलेश्वर ने भी महसूस किया हो कि सौजन्य और सादगी के दुशाले ओढ़कर व्यक्तित्व का आकर्षण भले ही बढ़ा लिया जाए, उसका आन्तरिक प्रभाव नहीं बढ़ाया जा सकता। सामाजिक व्यवहार के स्तर पर पैनापन और वाक्चातुर्य व्यक्तित्व को दिलचस्प और अभिव्यक्ति को तेज बनाते हैं इसलिए अपनी एकान्तिक गांठों को खोलकर सहज मेधा द्वारा उसने इस दिशा में भी रुचि लेना शुरू किया।"[03] वास्तव में एक व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवार, परिवेश और समाज का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। कमलेश्वर के व्यक्तित्व निर्माण में भी इन सबका समावेश देखा जा सकता है।

SAMPLE

जीवन :

कमलेश्वर का जन्म 6 जनवरी सन् 1932 ई. वी. को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी नामक कस्बे में एक सम्भ्रान्त कायस्थ परिवार में हुआ। उनका पूरा नाम कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना था, अपने पारिवारिक जनों के बीच कैलाश नाम से वह प्रसिद्ध थे। उनके पिता श्री जगदम्बा प्रसाद एवं माता शान्ति देवी थी। कमलेश्वर की माँ उनके पिता की दूसरी पत्नी थीं। घर एवं परिवार में कमलेश्वर सात भाई थे। सात भाईयों में पाँच की पहले ही मृत्यु हो गई थी। सबसे बड़े भाई रामेश्वर प्रसाद इलाहाबाद में काम करते थे। उनसे छोटे सिद्धार्थ एवं सबसे छोटे कमलेश्वर थे। कमलेश्वर के बचपन में ही, पिता श्री जगदम्बा प्रसाद की मृत्यु हृदय गति रुक जाने से हो गई जिसके कारण उसका प्रारम्भिक जीवन घोर आर्थिक एवं सामाजिक यातनाओं में गुजरा। कमलेश्वर का भैया सिद्धार्थ के साथ बड़ा आत्मीय रिश्ता था। वह बड़ा होशियार भी था। परिवार का भविष्य उस पर निर्भर था, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। सिद्धार्थ की भी अचानक मृत्यु हो गई। इस आकस्मिक घटना से परिवार एवं कमलेश्वर के भविष्य पर प्रश्न खड़ा हो गया।

वह अपने भविष्य को लेकर बहुत चिन्तित रहने लगे। इस संदर्भ में कमलेश्वर कहते हैं - ''शायद तब भविष्य था ही नहीं, जो कुछ था वह एक रुका हुआ वर्तमान था।''[04] बचपन में पिता एवं भाई की मृत्यु ने उन्हें नितांत अकेला बना दिया जिसके वजह से उनका बालपन अभावों, कष्टों, कठिनाईयों में बीता। घर में अभावों ने कमलेश्वर को काफी जिम्मेदार बना दिया। इस सम्बन्ध में कमलेश्वर कहते हैं- ''एक अमीर कहे जाने वाले घर में गरीब की तरह रहना, खाना खाकर भी भूखा उठना, अकुलाहट भरे दुःखों के बीच भी हँस सकना, बच्चा होते हुए भी वयस्कों की तरह निर्णय ले सकना, यह मेरी आदत नहीं मजबूरी थी।''[5]

कमलेश्वर ने मैनपुरी के गर्वनमेंट हाईस्कूल कॉलेज से प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण किया। वह पढ़ने में बहुत तेज थे। प्रारम्भ से ही उनमें असाधारण प्रतिभा परिलक्षित होने लगी थी। स्कूली दिनों में वे ज्यादातर क्लास में अब्बल आया करते थे। लेकिन उनका पुरस्कार दूसरों को दे दिया जाता था। स्कूली शिक्षा ग्रहण करने के बाद आगे अध्ययन के लिए वह इलाहाबाद चले गये और वहीं से उन्होंने कायस्थ पाठशाला से इन्टरमीडिएट की परीक्षा पास की। उसके बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी-एस.सी. एवं हिन्दी साहित्य में एम.ए. किया। कमलेश्वर शुरू में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी थे, लेकिन उनकी पहचान हिन्दी साहित्य से ही बनी। वह बचपन से ही